Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय जनता पार्टी में धार जिले की जनजातीय महिला नेतृत्व की भूमिका

दयाराम डावर* डॉ. ममता पाण्डेय डॉ. सीमा सत्या*****

* शोधार्थी, शासकीय महाविद्यालय, जयसिंह नगर, शहडोल (म.प्र.) भारत
** सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान) शासकीय महाविद्यालय, जयसिंह नगर, शहडोल (म.प्र.) भारत
*** सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान) शास. महाविद्यालय, अमरपुर, डिण्डौरी (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारतीय जनता पार्टी एक राष्ट्रवादी राजनीतिक दल हैं, जो भारत को एक सुदृढ़ एवं शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में विश्व पटल पर स्थापित करने के लिए कृतसंकल्प है। भारतीय जनता पार्टी में प्रत्येक जिले में जनजातीय क्षेत्रीय पंचायतों और राज्य विधानसभा की आरक्षित सीटों का विशेष महत्व है। मध्यप्रदेश के जिलों में भाजपा ने जनजाति समाज के मुद्दों पर अपनी चुनावी रणनीतियाँ तैयार की हैं, और यहाँ की जनजातीय महिलाओं को विशेष रूप से राजनीतिक सक्रियता का अवसर दिया गया हैं।

भारत में जनजाति समुदाय की विशेष सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक पहचान रही है। जनजाति समुदाय लंबे समय तक मुख्यधारा की राजनीति और समाज से अलग-थलग रहा, लेकिन पिछले कुछ दशकों में भारत की राजनीति में जनजाति समुदाय की भागीदारी और विशेष रूप से जनजाति महिला नेतृत्व का महत्व बढा है। भारतीय जनता पार्टी जैसे राष्ट्रीय राजनीतिक दल में जनजाति समुदाय के सदस्य, विशेष रूप से महिलाएं, अब अधिक सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं और नेतृत्व की भूमिकाओं में उभर रही हैं। मध्यप्रदेश में धार जिला पश्चिमी हिस्से में स्थित है और यह आदिवासी समुदायों, विशेष रूप से भील, पंवार और अन्य जनजातियों का गढ़ है। इस जिले में जनजातीय क्षेत्रीय पंचायतों, राज्य विधानसभा और लोकसभा की आरक्षित सीटों का विशेष महत्व है। धार जिले में भाजपा ने जनजाति समाज के मुद्दों पर अपनी चुनावी रणनीतियाँ तैयार की हैं, और यहाँ की महिला को विशेष रूप से राजनीतिक सक्रियता का अवसर दिया गया हैं।

शब्द कुंजी – भाजपा, राजनीति, सांस्कृतिक, सामाजिक-आर्थिक, जनजाति, महिला सशक्तिकरण।

प्रस्तावना – भारतीय राजनीति में महिलाओं का योगदान महत्वपूर्ण रहा हैं, लेकिन जनजाति महिला नेतृत्व पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया हैं। मध्य प्रदेश में जहां जनजातीय समुदाय की महत्वपूर्ण संख्या है, भारतीय जनता पार्टी ने समय-समय पर इन समुदायों के बीच नेतृत्व को प्रोत्साहित किया है। मध्य प्रदेश में जनजाति समुदाय का प्रभाव चुनावी राजनीति में विशेष है। राज्य में जनजातियों के लिए आरक्षित सीटों का बड़ा हिस्सा भाजपा के लिए एक रणनीतिक अवसर है। भाजपा ने विशेष रूप से इन समुदायों में महिला नेताओं को अपनी पार्टी में शामिल किया है, ताकि वे अधिक प्रभावी रूप से इन समुदायों के मुद्दो को उठाकर अपनी स्थिति मजबूत कर सकें। पार्टी ने महिला सशक्तिकरण के नारे के तहत जनजाति महिलाओं को मंच देने का प्रयास किया।

मध्यप्रदेश के पश्चिम क्षेत्र के धार जिला जनजाति बहुल्य क्षेत्र है, आदिवासी जनजाति समुदाय में सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत परिवार बुजुर्ग महिला मुखिया होती हैं। भारत देश वास्तव में एक विविधतापूर्ण और विशाल राष्ट्र हैं, जिसमें गावों की एक बड़ी संख्या है, और जनजातियों का भी महत्वपूर्ण स्थान हैं। भारत के विभिन्न हिस्सों में खासकर आदिवासी क्षेत्रों में, जनजातियों की बड़ी आबादी बसती हैं। भारत में जनजाति समुदाय की विशेष सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक पहचान रही है। जनजाति समुदाय लबें समय तक मुख्यधारा की राजनीति और समाज से अलग-थलग रहा, लेकिन पिछले कुछ दशकों में भारत की राजनीति में जनजाति समुदाय की भागीदारी और विशेष रूप से जनजाति महिला नेतृत्व का महत्व बढा है। भारतीय जनता पार्टी जैसे राष्ट्रीय राजनीतिक दल में जनजाति समुदाय के सदस्य, विशेष रूप से महिलाएं, अब अधिक सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं और नेतृत्व की भूमिकाओं में उभर रही हैं।

भारत में महिलाओं के प्रति आदर का भाव रहा है उन्हें देवी और शक्ति की उपमा दी गई है। वह परिवार में स्नेहमयी दुलारी बनी है तो माता के रूप में ममतामयी और वात्सल्य की प्रतिभूति धर्मपत्नी के रूप में पति की अनुगामिनी सहचरी, सहयोगी और मार्गदर्शिका आदि सही अर्थो में यह परिवार की धूरी है। कहा गया है कि नारी धरती जैसा फर्ज निभाती है और अपने अंक में समुद्र जैसी ममता समेटे आकाश हो जाती है। महिलाओं को अधिकार संपन्न बनाने के लिये सर्वप्रथम उन्हें विकास के बारे में जाग्रत करना होगा सदियों से होती आ रही बालिकाओं की उपेक्षा और उनके प्रति भेदभाव एक दिन में तो बदला नहीं जा सकता है लेकिन सभ्य समाज के सहयोग से देशभर में उनकी शिक्षा का स्तर ऊँचा उठाने की योग्यताएँ यदि सावधानी पूर्वक बनायी जायें तो स्त्रियों का सशक्तिकरण अवश्य ही संभव है। आज की महिलाएँ प्रत्येक क्षेत्र में अपना वर्चस्व दिखा रही हैं। सामाजिक, आर्थिक व्यवसायिक, राजनैतिक, शैक्षणिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक आदि सभी क्षेत्रों में उपलब्धियां बढ़ी है। आज वे किसी भी सम-सामयिक विषय पर किसी भी व्यक्ति के साथ सफलतापूर्वक चर्चा कर सकती है। उसने अपनी संकीर्ण मानसिकता को त्याग कर अपने में आत्मविश्वास पैदा कर लिया

है। आज महिलाएँ अपने दोहरे रूप को भी सफलतापूर्वक अंजाम दे रही है। एक तरह वह कैरियर वूमेन का खिताब हासिल किये हुये है तो दूसरी और होम मेकर के रूप में घर गृहस्थी की तमाम जिम्मेदारियों का सफलतापूर्वक निर्वाह कर रही है।

वर्तमान में महिला सही मायने में आधुनिक है, उन्होंने अपनी सामान्य दुर्बलताओं को दूर करके अपने आपको मजबूत करने अपनी स्वतंत्र पहचान कायम करने और पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने की कोशिश की है। केन्द्र सरकार ने महिलाओं के चहुंमुखी विकास के लिये वर्ष 2001 के 'महिला सशक्तिकरण वर्ष' घोषित किया। इसमें महिलाऐं अधिक सशक्त है, तो ऐसा ध्येय रखा गया। हाल के वर्षों में महिलाओं ने अपनी विशेष पहचान इस समाज के सामने प्रस्तुत की है, जिसमें वह साहसी, परिपक्व, सहिष्णु और एक मजबूत इरादे वाली महिला के रूप में उभर कर सामने आयी है।

मध्यप्रदेश में धार जिला पश्चिमी हिस्से में स्थित है और यह आदिवासी समुदायों, विशेष रूप से भील, पंवार और अन्य जनजातियों का गढ़ है। इस जिले में जनजातीय क्षेत्रीय पंचायतों, राज्य विधानसभा और लोकसभा की आरक्षित सीटों का विशेष महत्व है। धार जिले में भाजपा ने जनजाति समाज के मुद्दों पर अपनी चुनावी रणनीतियाँ तैयार की हैं, और यहाँ की महिला को विशेष रूप से राजनीतिक सक्रियता का अवसर दिया गया हैं।

शोध प्रविधि – प्रस्तुत अध्ययन मध्यप्रदेश के धार जिले पर आधारित है। उक्त जिले का चयन सविचार निदर्शन विधि के आधार पर चयन किया गया है। **'भारतीय जनता पार्टी में धार जिले की जनजातीय महिला नेतृत्व की भूमिका'** का अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीयक समंकों पर आधारित है।

द्वितीयक समंक : द्वितीयक समंकों का संकलन, पुस्तकों, पत्र-पत्रिका, जिला सांख्यिकी विभाग, तहसील कार्यालय, विकासखण्ड, कार्यालय, ग्रामीण विकास मंत्रालय रिपोर्ट, इंटरनेट से प्राप्त सामग्री एवं संबंधित विषय में विगत वर्षों से प्रकाशित लेखों इत्यादि से समंकों का संकलन किया गया है।

प्राथमिक समंक : प्राथमिक समंकों का संकलन धार जिले में 13 विकासखण्ड, 7 विधानसभा पद, 1 ससंद सदस्य, 761 ग्राम पंचायत, नगर परिषदों एवं नगर पालिका क्षेत्रों में कार्यरत विभिन्न राजनीतिक दलों की महिला कार्यकर्ताओं एवं जनप्रतिनिधियों में दैव निदर्शन विधि द्वारा जनजातीय महिलाओं नेत्रियों का चयन किया। दैव निदर्शन विधि से चयनित जनजातीय महिला उत्तरदाताओं से राजनीति में भूमिका एवं ग्रामीण विकास के अध्ययन के लिए साक्षात्कार अनुसूची के आधार पर ग्रामीण विकास में जनजातीय महिलाओं की भूमिका सम्बन्धित समंक संकलित किये गए।

जनजाति महिलाओं की पंचायत में नेतृत्व – जनजाति महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता सभी राजनीतिक गतिविधियॉ में सम्मिलित होना, स्वैच्छिक रूप से निर्णय लेना, यंत्र के रूप में, निर्णय निरूपण तथा क्रियान्वयन रूप एवं किसी कार्य की सहमति देना या सहमति न देना आदि गतिविधियॉ मे सम्मिलित हैं। स्वतंत्र भारत की लोकतांत्रिक राजनितिक संरचना सहभागिता के मूल्य पर आधारित हैं। राजनीतिक व्यवस्था के प्रदान किया गया है। समाज के निर्बल वर्ग, विशेषकर अनुसूचित जाति और जनजाति के व्यक्तियों को राजनीतिक सहभागिता का अवसर प्रदान करने के लिए तीन प्रकार की व्यवस्थाओं को मुख्य रूप से अपनाया गया है। प्रथम, अनुसूचित जनजाति समुदाय की सामाजिक-आर्थिक उन्नति के लिए शैक्षणिक कल्याण की योजनाएं अपनायी गयी है। द्वितीय, सरकारी नौकरियों में आरक्षण की व्यवस्था। इस व्यवस्था के अधीन लोकसभा, विधानसभा एवं त्रिस्तरीय पंचायतों के कुछ स्थानों में अनुसूचित जनजाति के सदस्यों के लिए आरक्षित कर दिए गए हैं। भारतीय जनता पार्टी की राजनीति में 16 प्रतिशत के लगभग जनजाति महिलाएं प्रतिनिधि बन कर नेतृत्व कर रही हैं।

भाजपा में आदिवासी महिला नेतृत्व की नयी समीकरण – भाजपा गढ़ रही नए समीकरण के माध्यम से आदिवासी जनजाति महिलाओं को नेतृत्वकी नयी अवसर मिल रही हैं। भाजपा को जीत का पर्याय बनाने के लिए जनाधार बढ़ाने का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का अपना ही अदांज हैं। जो वर्ग सियासत के लिए कमजोर माने गए, उन्हीं को मजबूत कर भाजपा चुनावी बाजी पलटने के लिए माहिर माने जाते हैं। ऐसा ही एक वर्ग इस लोकसभा, विधानसभा एवं त्रिस्तरीय पंचायत चुनावों में उभर कर सामपे आया हैं, जिसे ताश कर मोदी भाजपा को मजबूत कर रहे हैं। राजनीति मे दशकों तक उपेक्षित आदिवासी वर्ग की राजनीतिक पार्टीयों द्धारा पूछ-परख तो बढ़ी, पर इस जनजाति वर्ग की महिलाओं को अधिक मौका देकर भाजपा नए समीकरण गढ़ रही हैं। आदिवासी जनजाति बहुल राज्य मध्यप्रदेश हो या झारखण्ड, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जब भी प्रवास पर जाते हैं, तो आदिवासी जनजाति महिलाओं से संवाद अवश्य करते हैं उनकी जीवन शैली, संस्कृति, कला और परंपराओं से न केवल रूबरू होते हैं, बल्कि अपने अनुभव साझा कर उन्हें प्रभावित करने में भी सफल रहत हैं। जनजाति महिलाओं के बीच ऐसा अनुभव कभी नहीं रहा, जब प्रधानमंत्री ने उनके गांवों तक पहुंच कर मुलाकात की हो। मध्यप्रदेश में विशानसभा चुनाव से पहले शहडोल आए प्रधानमंत्री मोदी ने गोंड (कोयतोर), कोल और बैगा वर्ग की महिलाओं के साथ संवाद किया था। लोकसभा से पहले झाबुआ आए थे तो विलुप्त हो रही विशिष्ट पिछड़ी जनजाति सहरिया महिलाओं से बातचीत की थी। तब मोदी की दूरदृष्टि का अंदाज किसी को नहीं था। आदिवासी वर्ग की महिलाओं को नेतृत्व के लिए प्रोत्साहित करने का यह तरिका कोई भाप नहीं सका था।

भाजपा राजनीति में जनजाति महिला नेतृत्व का योगदान:

1. भारतीय जनता पार्टी एक राष्ट्रीय राजनीतिक पार्टी हैं, जिसमें जनजाति महिलाओं की महत्वपूर्ण योगदान हैं।
2. जनजातीय महिलाओं को विशेष रूप से राजनीतिक सक्रियता का अवसर दिया गया हैं।
3. भारत में जनजाति समुदाय की विशेष रूप से प्राकृतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक पहचान रही है।
4. भारत देश में जनजाति समुदाय मूलत: गांवों में निवास करने वाली होती हैं। यह जनजाति समुदायों में महिला प्रधान या नेतृत्व युक्त परिवार होती हैं।
5. भजपा राष्ट्रीय समानता, एकता और अखण्डता के लिए हमेशा से प्रयासरत रही हैं। भाजपा ने यह जनजाति महिला नेतृत्व को मुख्यधारा में लाने के लिए हमेशा से आगो रही हैं।
6. आज भी देश में राष्ट्रीय अखण्डता के मुद्दे उठाना पृथकतावाद से जूझना एवं इस निमित्त समाज को निरन्तर जाग्रत रखने का काम भाजपा ही कर रही है।

जनजातीय महिला नेतृत्व का समीक्षात्मक विश्लेषण :

1. जनजातीय महिला प्रतिनिधियों के क्षेत्र में ग्रामीण विकास योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए नेतृत्व की स्थिति।

2. जनजातीय महिला जनप्रतिनिधियों की यामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक विश्लेषण करना।
3. शिक्षण संस्थाओं में जनजाति महिलाओं नेतृत्व से सामाजिक स्तर में परिवर्तन करना।
4. पंचायत राज संस्थाओं में जनजाति महिला नेतृत्व की सहभागिता व सक्रियता का विश्लेषण करना।
5. त्रिस्तरीय पंचायती राज की कार्यप्राणली में जनजाति महिला जनप्रतिनिधियों की भूमिका का विश्लेषण करना।

जनजातीय महिला नेतृत्व की आवश्यकता – भारत की विभिन्न जातियों तथा समाजों मे महिलाओं की स्थिति अत्यन्त पिछड़ी हुई है। महिलाऐं अपने जीवन में परिवार तथा समाज से अपनी पहचान के लिए संघर्ष कर रहीं है। सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों के विभिन्न पहलुओं को अभिव्यक्त करना तथा परिवर्तनों पर जनजाति महिला नेतृत्व की चिन्तन के द्वारा मार्ग प्रस्तुत करना ही शोध प्रबंध का प्रमुख उद्देश्य है। केन्द्र तथा मध्यप्रदेश सरकार द्वारा महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिये विभिन्न प्रकार की योजनाएँ संचालित है जैसे संपूर्ण साक्षरता अभियान, सार्वजनिक प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम, अनुपूरक सम्पोषण कार्यक्रम, परिवार कल्याण कार्यक्रम, महिला बाल एवं विकास कार्यक्रम के साथ ही पंचायती राज संस्थाओं द्वारा स्वैच्छिक संगठनों जैसे महिला मण्डल युवा क्लब स्वावलंबी समूह आदि संस्थाओं को प्रोत्साहित कर महिलाओं को विकास की मुख्य धारा में जोड़ा जा सके। यद्यपि शासन सभी वर्ग की महिलाओं को स्वावलंबी बनाने की दिशा में सक्रिय है। फिर भी लाभान्वित हो सकने वाली महिलाओं का विकास कार्यक्रमों से जुड़ने के प्रति रूझान कम है इस तथ्य को ध्यान में रखकर उक्त शोध का उद्देश्य धार जिले की जनजातीय महिलाओं में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि परिवर्तनों की जाँच करना तथा विकास कार्यक्रमों में भागीदारी की स्थिति का अध्ययन करना तथा महिला जनजाप्रतिनिधियों के जीवन स्तर में आये बदलाव का विश्लेषण करना है।

वर्तमान स्थिति – वर्तमान समय में आज भाजपा प्रदेश एवं देश में एक प्रमुख राष्ट्रवादी शक्ति के रूप में उभर चुकी है और विभिन्न प्रदेशों एवं देश के सुशासन, विकास, एकता एवं अखंडता के लिए कृतसंकल्प है। 12 साल पार्टी ने विपक्ष की सक्रिय और शानदार भूमिका निभाई। भारतीय जनता पार्टी में जनजाति महिलाओं की नेतृत्व भारतीय राजनीति में भागीदारी प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही हैं। भाजपा नीतिगत राजनीति के माध्यम से समिति, संगठनों, त्रिस्तरीय पंचायत, विधानसभा और लोकसभा में जनजाति महिलाओं के द्वारा प्रत्येक में नेतृत्व की भूमिका निभा रही हैं। जनजातीय महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में एक तरफ जहां भाजपा सरकार ने इस समाज की महिला को राष्ट्रपति पद पर विराजमान किया। वहीं दमसरी ओर प्रदेश स्तर पर भी इस समाज से जुड़ी हूई महिलाओं को बड़े स्तर सशक्तिकरण का माध्यम बनाया। इनमें जनजीय राजनैतिक भागीदारी, जनजातीय महिलाओं पर विभिन्न योजनाओं का प्रभाव, प्रवासन और सामाजिक – सांस्कृतिक रूप से जनजातियों को किस प्रकार प्रभावित करता हैं।

निष्कर्ष – भारतीय जनता पार्टी एक राष्ट्रवादी राजनीतिक दल हैं, जो भारत को एक सुदृढ़ एवं शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में विश्व पटल पर स्थापित करने के लिए कृतसंकल्प है। भारतीय जनता पार्टी में प्रत्येक जिले में जनजातीय क्षेत्रीय पंचायतों और राज्य विधानसभा की आरक्षित सीटों का विशेष महत्व है। मध्यप्रदेश के जिलों में भाजपा ने जनजाति समाज के मुद्दों पर अपनी चुनावी रणनीतियाँ तैयार की हैं, और यहाँ की जनजातीय महिलाओं को विशेष रूप से राजनीतिक सक्रियता का अवसर दिया गया हैं।

भारत में जनजाति समुदाय की विशेष सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक पहचान रही है। जनजाति समुदाय लबें समय तक मुख्यधारा की राजनीति और समाज से अलग–थलग रहा, लेकिन पिछले कुछ दशकों में भारत की राजनीति में जनजाति समुदाय की भागीदारी और विशेष रूप से जनजाति महिला नेतृत्व का महत्व बढ़ा है। भारतीय जनता पार्टी जैसे राष्ट्रीय राजनीतिक दल में जनजाति समुदाय के सदस्य, विशेष रूप से महिलाएं, अब अधिक सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं और नेतृत्व की भूमिकाओं में उभर रही हैं। मध्यप्रदेश में धार जिला पश्चिमी हिस्से में स्थित है और यह आदिवासी समुदायों, विशेष रूप से भील, पंवार और अन्य जनजातियों का गढ़ है। इस जिले में जनजातीय क्षेत्रीय पंचायतों, राज्य विधानसभा और लोकसभा की आरक्षित सीटों का विशेष महत्व है। धार जिले में भाजपा ने जनजाति समाज के मुद्दों पर अपनी चुनावी रणनीतियाँ तैयार की हैं, और यहाँ की महिला को विशेष रूप से राजनीतिक सक्रियता का अवसर दिया गया हैं। जिससे धार जिले की जनजाति महिलाऍं अपने क्षेत्रिय मुद्दों और शासकीय योजनाओं को अपनी नेतृत्व क्षमता के द्वारा जन समुदाय एवं समाज के लोगों तक पहुचाने का कार्य बखूबी निभा रही हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. मिश्रा, डॉ, गायत्री एवं चर्मकार, बेबी (2022), भारतीय राजनीति में भारतीय जनता पार्टी का इतिहास एवं विकास, ijrrss 0(4); अक्टूम्बर–दिसंबर, 2022.
2. वाजपेयी, अटल बिहार (1996), अटल बिहारी वाजपेयी के कुछ भाषण और कुछ लेख, दिल्ली, 1996, 4अ – 225.
3. Constitution and Rules Of Bharatiya Janta Party (New Delhi A BJP Publication)1984.
4. Sisodia, Yatindra Singh and Jha Sumit Kumar (2024); Explaining the BJP's Triumph in the 2023 Madhya Pradesh Electons, Economic & Political weekly EPW (2024), Vol. Lix No. 13.
5. अहुजा, गुरूदास (1996); भारतीय राजनीति भाजपा का आगमन दिल्ली 1996, पेज – 24।
6. वैदय, नरेश कुमार (2023);'जनजाति विकास' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर एवं नई दिल्ली।
7. श्रीवास्तव, अरूण कुमार (1994) : भारत में पंचायती राज, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर, पृष्ठ 7।
8. सिसोदिया, यतीन्द्र सिंह (2000): पंचायतीराज एवं अनुसूचित जाति महिला नेतृत्व, रावत रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृष्ठ 48।
9. सिंह, लता (1995): 'विकास में महिलाओं की भागीदारी' कुरूक्षेत्र।
10. उपाध्याय, हेमंत कुमार (2024):'आदिवासी महिलाओं के नेतृत्व, भाजपा के नयी समीकरण' नई दुनिया, मार्च, 2024।

****